



छुट्टी का दिन पर निबंध

संजय भगत

प्रस्तावना

छुट्टियां वर्ष का सबसे अच्छा समय है। मैं हमेशा अपनी गर्मी की छुट्टियों के लिए उत्सुक रहता हूं क्योंकि ये साल की सबसे लंबी छुट्टियां होती हैं। मैं ज्यादातर उन्हें अपने परिवार और विस्तारित परिवार के साथ बिताता हूँ। अगर मैं अच्छे से पढाई करता हूँ और अच्छा व्यवहार करता हूँ तो मेरे माता-पिता मुझे छुट्टियों के दौरान दोस्तों के साथ घूमने की इजाजत भी देते हैं।

स्कूल के दोस्तों के साथ मेरी पहली छुट्टियाँ

5वीं कक्षा तक मेरे माता-पिता ने मुझे स्कूल की तरफ से आयोजित यात्रा पर जाने की इजाजत नहीं दी थी लेकिन जैसे ही मैंने 6वीं कक्षा में प्रवेश किया था तब मुझे स्कूल की यात्रा पर जाने का मौका मिला। मेरे स्कूल ने गर्मियों की छुट्टियों के दौरान शिमला में तीन दिन की यात्रा का आयोजन किया था। मेरे कई दोस्तों ने यात्रा के लिए जाने के लिए अपनी इच्छा जताई। मैं भी जाना चाहता था लेकिन मुझे डर था कि मेरे माता-पिता इसके लिए सहमत नहीं होंगे। पहले मैंने सोचा कि इस यात्रा के लिए मुझे उनसे इजाजत नहीं लेनी चाहिए क्योंकि उनका जवाब ना में होगा लेकिन मेरे दोस्तों ने मुझे पूछने के लिए विवश कर दिया।



इस यात्रा के लिए सहमति पत्र अपने पिता को हिचकिचाते हुए दिया था और यात्रा के विवरण के बारे में उन्हें बताया था। मैंने उन्हें यह भी बताया कि मेरे कई सहपाठी इस यात्रा के लिए जा रहे हैं और मैं भी जाना चाहता हूँ। शुरू में उन्होंने इनकार कर दिया क्योंकि उन्होंने महसूस किया कि मैं अकेले बाहर घूमने के लिहाज़ से उम्र में बहुत छोटा हूँ। मुझे मेरी मां से यात्रा के लिए जाने की अनुमति लेने के लिए लगभग 2 दिन लग गए और उन्होंने ही मेरे पिता को इसके लिए राजी किया। सहमति मिलने से मैं बेहद खुश और यात्रा के बारे में उत्साहित हो गया था। मैंने उनसे वादा किया था कि मैं अजनबियों से बात नहीं करूँगा, हमेशा समूह के साथ रहूँगा और यात्रा के दौरान सब चीजों के प्रति सावधान रहूँगा।

हमने ट्रेन से दिल्ली से कालका तक यात्रा की और फिर शिमला तक पहुंचने के लिए एक बस ली। हम दोपहर तक हमारे होटल में पहुंचे। पहले दिन हम मॉल रोड पर गए। मौसम सुखद था और जगह अद्भुत थी। इससे पहले भी मैं कई हिल स्टेशनों पर गया था लेकिन यह जगह मेरे लिए बिल्कुल नई थी। दोस्तों के साथ ने इसे और अधिक अद्भुत बना दिया। हम मॉल रोड पर घूम रहे थे और हमने होटल में वापस जाकर रेस्तरां में खाना खाने की योजना बनाई थी लेकिन ताजे मोमोस की खुशबू ने हमारा मूड बदल दिया। वे अति स्वादिष्ट थे और हमने इतने मोमोस खा लिए कि पेट में रात के खाने के लिए कोई जगह नहीं बची।

अगले दिन हम जाखू मंदिर गए। मंदिर के लिए सड़क काफी खड़ी थी और हमें अपने रास्ते में सैकड़ों लंगूरों का सामना करना पड़ा। यह मंज़र थोड़ा डरावना था लेकिन साथ ही रोमांचक भी था। मंदिर बहुत ही शांत जगह पर स्थापित है और हम कुछ समय के लिए शांति से वहां बैठ



गए। हमने वापस आते वक़्त सड़क पर घूमने का फैसला किया और वह अनुभव वाकई अद्भुत था। शाम में हमने चर्च का दौरा किया और फिर मॉल रोड पर समय बिताया। हमारी यात्रा के तीसरे दिन हमारे शिक्षकों ने हमें शॉपिंग के लिए जाने दिया। हम कुछ अच्छा सामान खरीदने के लिए तिब्बती बाजार में गए। मैंने अपने लिए स्कार्फ़, हेयर क्लिप और एक जैकेट खरीदा। मैंने अपने भाई-बहनों और दोस्तों के लिए भी स्मृति चिन्ह खरीदे।

आखिरकार वह समय आ ही गया जब हमने शिमला के सुंदर पहाड़ों और घाटी के दृश्य को अलविदा कहा। हमने दिल्ली के लिए सीधे रात की बस पकड़ी और सुरक्षित घर पहुंच गए।

निष्कर्ष

मैं इससे पहले कई बार अपने परिवार के साथ घूमने गया हूँ और मुझे अपने परिवार के साथ बिताया वक़्त अच्छा भी लगा लेकिन दोस्तों के साथ यात्रा पर जाने की खुशी और उत्साह कुछ अलग ही है। तब से मैं अपने दोस्तों के साथ कई यात्राएं कर रहा हूँ लेकिन मैं उनके साथ मेरी पहली यात्रा पर बिताए अद्भुत क्षणों को कभी नहीं भूल सकता।